In the name of Allah the Most Gracious the Ever Merciful

بسم اللہ الرحمن الرحیم

Press Desk
Ahmadiyya Muslim Jamaat
INTERNATIONAL
(INDIA)

شعبہ پریس اینڈ میڈیا بھارت
Office Press & Media
Ahmadiyya Muslim Jama'at India,
Qadian-143516, Distt.Gurdaspur, Punjab, India.
Mobile: +91-99887 57988
Email: pressamjindia@gmail.com
Tel: +91-1872-500282
ahmadiyya_press ahmadiyyapressindia

(A Registered Religious and Charitable Society in India under the Societies Registration Act XXI 1860)

زیرحوالہ/Ref **270**
تاریخ/Date **27-12-2024**

प्रैस नोट

मुस्लिम जमाअत अहमदिया का 129वां सालाना जलसा
प्रेम सौहार्द, अमन शांति और रूहानियत में तरक्की का प्रतीक ।

कादियां जिला गुरदासपुर 27 दिसंबर 2024

मुस्लिम जमाअत अहमदिया का 129वां सालाना जलसा अहमदिया मुख्यालय कादियां ज़िला गुरदासपुर में शुक्रवार 27 दिसंबर से 29 दसंबर आयोजित हो रहा है ।

जमाअत अहमदिया भारत के प्रवक्ता श्री. के तारिक अहमद ने जारी प्रैस नोट में कहा है कि आज से 133 वर्ष पूर्व 1891 में अहमदिया मुस्लिम जमाअत के संस्थापक हज़रत मिर्जा गुलाम अहमद साहिब ने अल्लाह से आदेश पाकर सभी कौमों में अमन शांति और सौहार्द को बढ़ावा देने के लिये इसकी बुनियाद रखी थी ।

इस रूहानी जलसे का उद्देश्य अपने पैदा करने वाले के साथ वास्तविक और रूहानी तौर पर जुड़ना है और आपसी भाईचारे को बढ़ावा देना है । यह जलसा कोई सांसारिक मेलों की तरह नही बल्कि अपना एक विशेष महत्व रखता है ।

यह वह रूहानी इकठ है जिसमें भाग लेने के लिये सच्चाई के परवाने दूर दराज़ क्षेत्रों से अपने सांसारिक उद्देश्य को छोड़ कर सच्चाई और रूहानियत की तलाश में कई कठिनाईयां सहन करके देश विदेश से यहां आते हैं ।

संस्थापक जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्जा गुलाम अहमद साहिब कादियानी अलैहीसलाम जलसे के संद्रर्भ में कहते हैं ।

"इस जलसे का उदेश्य जमाअत के लोगों का एक दूसरे से बार बार मिलना, अपने अंदर नेक तबदीली पैदा करना और ख़ुदा के बताए मार्ग पर चलते हुए परहेज़गार, नर्मदिल और मानवता के आदर्शो पर गुज़ारना है।"

इस तीन दिनों में जलसे में ऐसे भाषणों का प्रबंध होता है जिस से रूहानीयत मज़बूत होती है और इसमें भाग लेने वाला मनुष्य अपने अंदर एक नया जोश और जीवन को महसूस करता है जो धार्मिक और नैतिकता को ताज़गी बख्शता है ।

इस जलसे के माध्यम से अहमदिया मुस्लिम जमाअत यह संदेश देती है कि अपने पैदा करने वाले की तरफ झुको और “मुहब्बत सबसे और नफ़रत किसी से नही” के नियमों अनुसर अपने जज़बात और एहसास का सम्मान करो और मानवजाति के कल्याण और मानवता की भलाई के लिये अपना योगदान डालो।

भाषण 1ः

जलसा सालाना कादियान की नींव हज़रत मसीह मोऊद अलैहिस्सलाम ने ईश्वरीय अनुमति से रखी थी, जिसका उद्देश्य इस्लाम के प्रभुत्व और आध्यात्मिक प्रगति को बढ़ावा देना है। अहमदिया मुस्लिम समुदाए के पांचवें खलीफ़ा ने जुमा के ख़ुतबे (23 अगस्त 2024) में जलसे के उद्देश्यों पर ज़ोर देते हुए कहा कि यह अवसर नैतिक और आध्यात्मिक प्रगति, परमेश्वर से निकटता, तक़वा में वृद्धि, उच्च नैतिक मूल्यों की स्थापना, मनमुटाव के अंत और अल्लाह की रज़ा प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया जाए। अंत में, सम्मिलित होने वालों के लिए प्रार्थनाएं की गईं और विशेष प्रार्थनाओं की याद दिलाई गई।

भाषण 2ः

खुदा ताला की सिफ़त "समीउद्दुआ" (दुआ को सुनने वाला) को कुरआन, हदीस और हज़रत मसीह मोऊद अलैहिस्सलाम के फरमानों की रोशनी में बयान किया गया ताकि अल्लाह ताला की मारिफ़त (ज्ञान) हासिल हो। हज़रत मसीह मोऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि जो मांगता है, उसे दिया जाता है, और जो अल्लाह की बारगाह में दुआ करता है, उसके लिए रास्ते खोले जाते हैं। हज़रत उमर के इस्लाम कबूल करने, हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल के अहमदियत कबूल करने, ग़ज़वा-ए-बदर की जीत जैसे वाकयों को मिसाल के तौर पर पेश किया गया। इसके अतिरिक्त, हज़रत मौलाना गुलाम रसूल राजिकी की दुआ से कश्ती की हिफ़ाज़त, खलीफ़तुल मसीह खामिस की दुआ से 2006 के फिजी तूफ़ान का रुकना, और नई अहमदी महिला नाज़िया काज़मी का कैंसर से शिफ़ा पाना जैसे वाकये अल्लाह की दुआ सुनने और उसे क़बूल करने की सिफ़त का माज़हर हैं।

भाषण 3ः

इस्लामी शिक्षाओं के अनुसार, शादी-ब्याह और वलीमे में फिजूलखर्ची से बचना ज़रूरी है, क्योंकि यह आर्थिक कठिनाइयों का कारण बन सकता है। कुरआन करीम में हिदायत दी गई है: "खाओ और पियो लेकिन फिजूलखर्ची न करो" (सूरह अल-आराफ़: 32)। इसी तरह, रास्तों के अधिकारों के संबंध में हज़रत मुहम्मद ﷺ ने रास्तों पर बैठने और दूसरों को तकलीफ़ देने से मना किया है (मुस्लिम किताब अस्सलाम)। बातचीत के आदाब में ज़ुबान की हिफ़ाज़त पर ज़ोर दिया गया है, क्योंकि ज़ुबान इंसान को जन्नत या जहन्नम की राह पर ले जा सकती है। हज़रत मुहम्मद ﷺ ने फ़रमाया: "मुसलमान वह है जिसकी ज़ुबान और हाथ से दूसरे लोग महफूज़ रहें" (बुखारी हदीस 6484)। मस्जिदों के आदाब में उनका अदब व सम्मान और सफ़ाई बनाए रखना शामिल है, क्योंकि ये अल्लाह के घर हैं और दुआ व

इबादत के लिए ख़ास हैं। कुरआन पाक में अल्लाह ताला ने फ़रमाया: "मेरे घर को हमेशा पाक और साफ़ रखो" (सूरह अल-हज: 27)। यह सभी हिदायतें इस्लाम की अमली ज़िंदगी के उसूलों को वाज़ेह करती हैं।

भाषण 4ः

हज़रत मुहम्मद मुस्तफा ﷺ के उत्कृष्ट चरित्र की एक प्रमुख विशेषता यह थी कि आप हमेशा शांति को प्राथमिकता देते थे और युद्ध से यथासंभव बचने का प्रयास करते थे। मक्का के दौर में अत्याचारों के बावजूद आपने क्षमा और सहनशीलता की शिक्षा दी। बदर के युद्ध और अन्य ग़ज़वात (युद्धों) में आपने युद्ध के उच्च नैतिक सिद्धांत स्थापित किए, जिनमें औरतों, बच्चों, बुज़ुर्गों, धार्मिक नेताओं, उपासना स्थलों और प्राकृतिक संसाधनों को नुकसान न पहुंचाने की हिदायत शामिल थी। सुलह-ए-हुदैबिया के परिणामस्वरूप फ़तह-ए-ख़ैबर और फ़तह-ए-मक्का जैसे ऐतिहासिक घटनाक्रम हुए। फ़तह-ए-मक्का के दौरान आपने अपनी उच्च नैतिकता का प्रदर्शन करते हुए क़ुरैश-ए-मक्का को माफ़ कर दिया और कहा: "जाओ, तुम सब आज़ाद हो। आज तुम पर कोई गिरफ़्त नहीं।" यह विजय वास्तव में आपके महान चरित्र और "रहमतुल्लिल-आलमीन" (संपूर्ण जगत के लिए दया) होने की विजय थी, जिसका स्वीकारोक्ति आपके शत्रुओं ने भी किया।

भाषण 5ः

हज़रत हम्ज़ा, जिन्हें "सैयदुश्शुहदा,卐 卐असदुल्लाह,卐 और "असद रसूल" जैसी महान उपाधियों से नवाज़ा गया, रसूल अल्लाह ﷺ के चाचा और क़ुरैश के सरदार हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के बेटे थे। आपने 6 नबवी में इस्लाम क़बूल किया और बदर के युद्ध और उहद के युद्ध में अपनी बहादुरी का प्रदर्शन किया। उहद के युद्ध में शहीद हुए, जिस पर रसूल अल्लाह ﷺ को गहरा दुख हुआ। इसी तरह, हज़रत मिर्ज़ा शरीफ अहमद साहिब, हज़रत मसीह मोऊद की मुबश्शिर औलाद में से थे। 24 मई 1895 को पैदा हुए हज़रत मियां साहिब जमात के उच्च पदों पर आसीन रहे और कुछ चीज़ों के आविष्कारक भी थे। 26 दिसंबर 1961 को 66 साल की उम्र में आपका निधन हुआ। इन महान हस्तियों का जीवन हमारे लिए मार्गदर्शक और प्रेरणा का स्रोत है।

<u>प्रैस नोट समाप्त</u>

<u>Tariq Ahmad K</u>
Incharge Press & Media,
Ahmadiyya Muslim Jama'at India.
Mobile: +91-9988757988.